(R)

व्यक्तित्व विकृतियाँ
PERSONALITY DISORDER

B.A-II-(H)
PAPER-III

दैनिक जीवन में कभी-कभी वैयक्तिक प्रतिष्ठा, आर्थिक लाभ अथवा इसी तरह के अन्य उद्देश्यों से प्रेरित होकर छोटी-बड़ी समाजविरोधी प्रतिक्रियाएँ करते हैं। लेकिन, इसे समाजविरोधी व्यक्ति की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इसका कारण यह है कि ऐसे लोग अपने गलत कार्यों से अवगत होते हैं, इसके लिए इनमें क्षोभ की भावना और पछतावा होता है और पुनः ऐसी गलती न करने का निर्णय लेता है। इसी प्रकार समाजविरोधी व्यक्ति इसके विपरीत होता है। समाजविरोधी व्यक्तित्व की कुछ मुख्य परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :—

1. डॉ. एस. श्रीवास्तव :— "समाज-विरोधी व्यक्ति जानता है कि दूसरे लोग उनसे क्या आशा रखते हैं परंतु वह जानबूझकर दूसरे व्यक्तियों के आशाओं के विरुद्ध कार्य करता है। वह आज्ञापालन नहीं करता है, झगड़ा करता है और तोड़-फोड़ करने वाला होता है। वह दूसरों को सताता है और स्वयं-मुक्त रहकर व्यक्तिगत आनन्द प्राप्त करता है।"

2. कोलमैन के अनुसार :— "इनकी मुख्य विशेषता नैतिक विकास का अभाव है। ये समाज द्वारा स्वीकृत मान्य व्यवहारों को करने के अयोग्य होते हैं। मूल रूप से ये असामाजिक होते हैं। ये दूसरे व्यक्तियों,

समूहों या सामाजिक मूल्यों के प्रति अधिक रूप से वफादारी के अयोग्य होते है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के अनुसार जो गलत-कार्य करता है, समाज-विरोधी व्यक्तित्व के अन्तर्गत आता है। व्यक्तित्व-संबंधी विकृति के इस रूप को और भी कई नामों से जाना जाता है। —

(1) नैतिक मूढता (Moral imbecility) :— 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में चारित्रिक दोषों अथवा व्यक्तित्व-संबंधी विकृतियों से ग्रस्त व्यक्ति के बारे में यही समझा जाता था कि उनमें नैतिकता की भावना का अभाव पाया जाता है, अतः उन्हें नैतिक मूढ कहा जाता था। 'मूढ' शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया जाता था जिसका अर्थ 'बौद्धिक योग्यता में ह्रास' होता था।

(2) गठन-संबंधी मनोविकारी हीनता (Constitutional Psychopathic inferiority) :— आगे चलकर व्यक्तित्व-संबंधी विकृती को वंशगत विशेषता माने जाने लगा और इन दोषों को गठन-संबंधी मनोविकारी हीनता कहा जाने लगा। लेकिन आधुनिक अध्ययनों द्वारा अब यह प्रमाणित हो चुका है कि इन विकृतियों के विकास में वंशानुक्रम का कोई खास महत्व नहीं होता तथा ये अधिकतर अर्जित होते हैं।

(3) मनोविकारी व्यक्तित्व (Psychopathic Personality) :—

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में व्यक्तित्व-संबंधी विकृति को मनोविकारी व्यक्तित्व की संज्ञा दी जाने लगी। 'मनोविकारी व्यक्तित्व' एक व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत व्यक्तित्व-संबंधी अनेक प्रकार के चारित्रिक दोषों से संबंधित मनोविकारों को शामिल किया जाने लगा तथा इनके मनोवैज्ञानिक पक्षों को जानने तथा सुधारने के उपायों की खोज की जाने लगी।

4. समाजविकारी व्यक्तित्व (Sociopathic Personality) :- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक संघ ने अपने प्रथम बुलेटिन में मनोविकारी व्यक्तित्व के बदले 'समाजविकारी' का नाम दिया। उन्होंने बताया कि व्यक्तित्व संबंधी विकृतियों से ग्रस्त व्यक्ति का व्यवहार वस्तुतः सामाजिक नियमों या आदर्शों से विचलित व्यवहार के रूप को इंगित करता है।

5. समाजविरोधी व्यक्तित्व (Anti-Social Personality) :- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक संघ के दूसरे बुलेटिन में व्यक्तित्व-संबंधी विकृति से ग्रस्त व्यक्तियों को समाजविरोधी व्यक्तित्व कहा गया

Next day -

Hrishi Kesh lal.
Deptt = Psychology.
B.M.C Rahika.